अमेरिका का जन्म प्रमाण-पत्र

जॉन आर. हेबर्ट

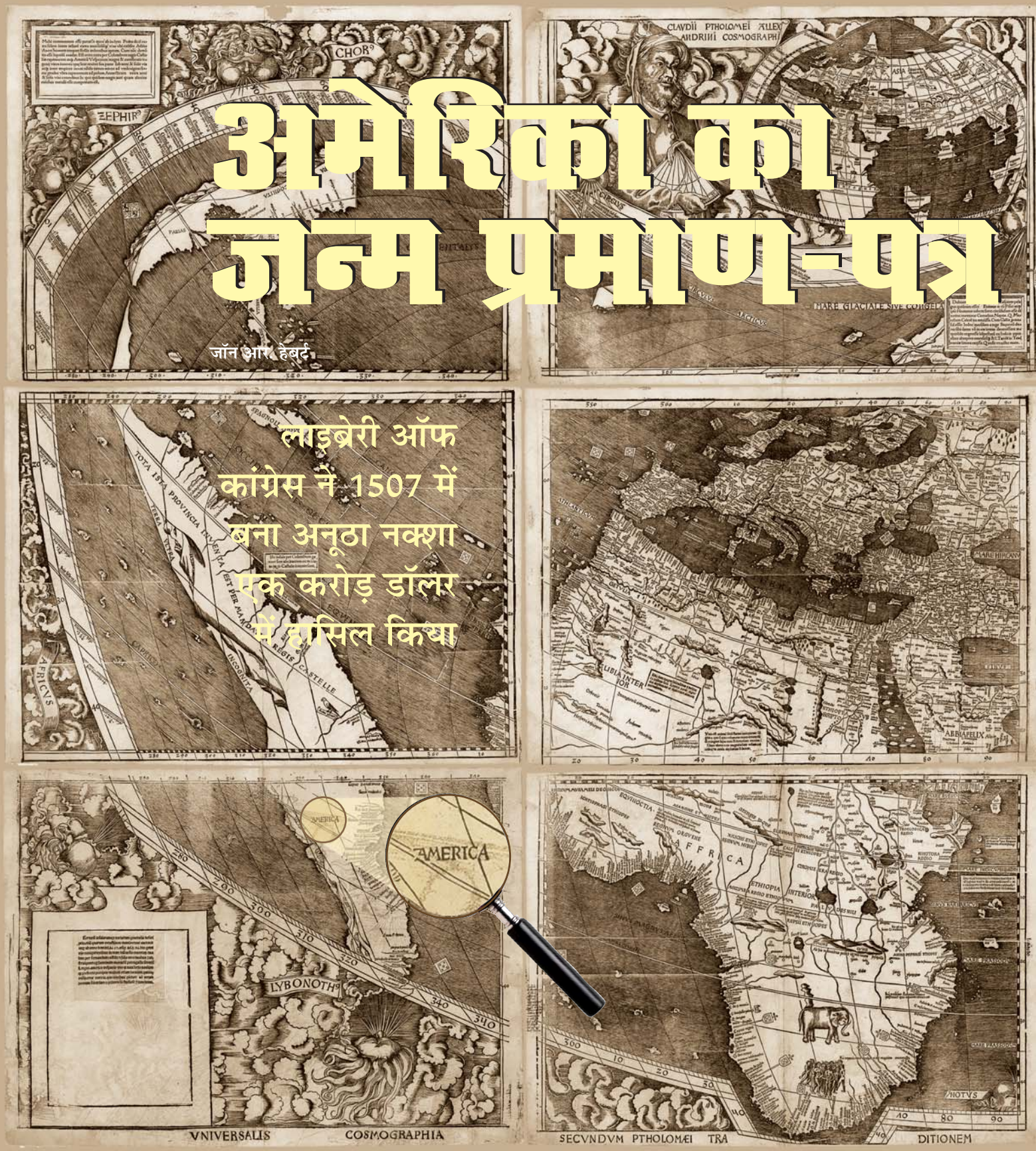

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने 1507 में बना अनूठा नक्शा एक करोड़ डॉलर में हासिल किया

कॉपीराइट © 2003 द लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस

AMERICI VESPVCII
APARCTIAS
AQVILO
MARE GLACIALE
ARCTICO
CECIAS
SVBSOLANVS
CHATAY
ASIA
SERICA REGIO
CITHIA EXTRA IMAO
SINVS GANGETICVS
INDIA MERIDIONALIS
EVRVS
AVSTRVS
EQVINOCTIALIS
OCEANVS INDICVS MERIDIONALIS
TROPICVS CAPRICORNI
AVSTER
EVRONOTVS
JAVA MAIOR
ET AMERICI VESPVCII ALIORVM LVSTRATIONES

आखिर 2003 के मई महीने के आखिर में लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने खरीद प्रकिया पूरी कर एक अनूठे नक्शे की एकमात्र बची प्रति को हासिल कर लिया। विश्व के महाद्वीपों को हम जैसे आज जानते-देखते हैं, उस तरह प्रस्तुत करने वाला यह नक्शा 1507 में मार्टिन वाल्डसीमुल्लर ने तैयार किया था। जानकार इसे अमेरिका का जन्म प्रमाणपत्र कहते रहे हैं क्योंकि यह वह पहला दस्तावेज है जिसमें 'अमेरिका' के नाम का उल्लेख है। पश्चिमी गोलार्ध को अलग और पूरा पहली बार मार्टिन वाल्डसीमुल्लर के नक्शे में ही दिखाया गया। प्रशांत महासागर को एक अलग जलराशि के रूप में भी पहली बार इसी नक्शे पर अंकित किया गया। इसी नक्शे में लगभग 500 साल पहले संसार के बारे में यूरोप की नई दृष्टि को दर्ज किया गया। नक्शे की खरीद के साथ ही इस विशिष्ट मानचित्रण दस्तावेज को लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के लिए जुटाने के लगभग एक सदी से चल रहे प्रयासों का पटाक्षेप हो गया।

1507 के सबसे प्राचीन आधुनिक नक्शे के मूल नक्शाकार मार्टिन वाल्डसीमुल्लर सोलहवीं सदी के अध्येता, मानवतावादी, मानचित्रकार और पादरी थे जो सां-दिए (फ्रांस) की एक छोटी सी बौद्धिक मंडली जिम्नेजियम वॉसें का हिस्सा थे। उनका जन्म 1470 के दशक में जर्मनी में फ्रीबर्ग के पास हुआ था और मृत्यु 1522 में सां-दिए के कैनॅन हाउस में। उनके जीवन का ज्यादातर हिस्सा नक्शों के अध्ययन और रचना में बीता। उत्तर-पूर्वी फ्रांस के एक अलग-थलग कोने में तैयार किए गए इस पहले आधुनिक नक्शे का पूरा नाम है 'यूनिवर्सेलिस कॉस्मॉग्राफिया सेकंदा टॉलेमी ट्रेडिसनेम एस अमेरिकी वेस्पुच्ची एलियोरम क्वे लस्त्रेस्यन्स' (टॉलेमी की परंपरा और अमेरिगो वेस्पुच्ची और अन्य की यात्रा के अनुसार सारी पृथ्वी का एक रेखांकन)। 45 से.मी.×60 से.मी. के 12 अलग-अलग पृष्ठों पर लकड़ी के ब्लॉकों की पट्टिकाओं से छपा यह नक्शा जोड़ने पर 4 फुट×8 फुट से भी बड़ा बैठता था।

इस लंबे-चौड़े उत्कृष्ट नक्शे में पूरी दुनिया के नक्शे के अलावा दो इनसेट में पूर्वी और पश्चिमी गोलार्धों को अलग-अलग दिखाया गया है। इसमें टॉलेमी और वेस्पुच्ची के चित्र हैं, विभिन्न दिशाओं में बहने वाली हवाओं के रेखांकन हैं और संसार के चुनिंदा हिस्सों के बारे में विस्तृत टिप्पणियां हैं। वाल्डसीमुल्लर का नक्शा ऐसे साहसिक बयान का प्रतिनिधित्व करता था जिसने आधुनिक विश्व को तर्कशील बनाने का काम किया। अफ्रीकी तट पर या अटलांटिक महासागर के पार स्पेन, पुर्तगाल और अन्य द्वारा प्रायोजित अन्वेषण कार्यों के जरिये यूरोप में पहुंच रही रोमांचक जानकारियों के प्रकाश में ऐसा हुआ। इस नक्शे ने उस समय यूरोप में खलबली मचा दी होगी क्योंकि यह तब तक प्रचलित संसार के नक्शों से बहुत अलग था। इससे पहले संसार के नक्शे यूनानी भूगोलशास्त्री क्लॉडियस टॉलेमी के नियत किए सूत्रों के अनुसार बनते थे। आज हमें 1507 में तैयार किया गया यह नक्शा बहुत सटीक लगता है लेकिन शुरूआती सोलहवीं सदी में यह दुनिया की जानी-पहचानी अवधारणा से बहुत ही अलग पाया गया होगा। इसके आगमन से यूरोप में इस बात पर गर्मागर्म बहस जरूर छिड़ी होगी कि इसमें टॉलेमी के क्लासिक संसार (जो तीन महाद्वीपों यूरोप, अफ्रीका और एशिया तक सीमित था) से अलग एटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच एक अज्ञात महाद्वीप (यूरोपियनों और पूर्वी गोलार्ध के अन्य वासियों के लिए तो यह अज्ञात ही था) दिखाया गया है।

अक्सर कहा जाता रहा है कि पश्चिमी गोलार्ध को 'अमेरिका' कहकर वाल्डसीमुल्लर ने क्रिस्टॉफर कोलंबस की ऐतिहासिक उपलब्धि को गलत ढंग से खारिज कर दिया लेकिन यह स्पष्ट है कि वाल्डसीमुल्लर और उनके सहयोगियों ने कोलंबस की खोजी यात्राओं और अन्वेषणों पर गौर किया था।

वर्ष 1900 का एक पोस्टकार्ड जिसमें बेडेन-वर्टेमबर्ग (जर्मनी) स्थित वॉल्फेग किले को दिखाया गया है। वाल्डसीमुल्लर का ऐतिहासिक नक्शा सालों तक यहीं गुमनामी के साये में रहा। वॉल्डबर्ग संग्रह पर शोध कर रहे पादरी जॉसेफ फिशर 1901 में इसे दुनिया के सामने लाए।

ध्यान देने लायक बात यह है कि पूरे पश्चिमी गोलार्ध का नामकरण एक जीवित व्यक्ति के नाम पर हुआ। वेस्पुच्ची नक्शा बनने तक जीवित थे। उनकी मृत्यु 1512 में हुई। 1513 तक वाल्डसीमुल्लर ने अपने नक्शे से 'अमेरिका' शब्द हटा दिया, शायद वह जाहिर कर रहे हों कि नए संसार की अपनी समझदारी का श्रेय वह केवल वेस्पुच्ची को नहीं देना चाहते। 1507 में अमेरिका के नाम से चिह्नित क्षेत्र को 1513 की एटलस में टैरा इन्कॉग्निटा (अज्ञात क्षेत्र) के रूप में अंकित किया गया है। लेकिन 1515 में योहान शॉनर और 1520 में पीटर एपियन के बनाए नक्शों में पश्चिमी गोलार्ध को 'अमेरिका' का नाम दिया गया और फिर इसका यही नाम स्वीकृत हो गया ।

बताया जाता है कि 1507 के नक्शे की 1,000 प्रतियां छपीं। उस जमाने में यह बहुत बड़ी संख्या थी। नक्शे की एकमात्र उपलब्ध प्रति शायद इसलिए बची रह पाई क्योंकि जर्मन ग्लोब निर्माता शॉनर (1477-1547) ने इसे एक बस्ते में बांध कर रख दिया था। उन्होंने संभवत: अपने काम के सिलसिले में इसकी प्रति प्राप्त की होगी। शॉनर के बांधे बस्ते में 1507 के नक्शे की (अब) एक मात्र उपलब्ध प्रति के अलावा वाल्डसीमुल्लर के ही 1516 में बनाए दीवार पर टांगे जानेवाले बड़े नक्शे 'कार्टा मैरिना' की भी प्रति मिली - इसमें दक्षिणी अमेरिका को टैरा नोवा (नई दुनिया) और उत्तरी अमेरिका को क्यूबा कहा गया है। बाद के किसी दौर में प्रिंस वाल्डबर्ग-वॅल्फेग्ग के परिवार ने शॉनर के नक्शों का बस्ता ले लिया और बीसवीं सदी की शुरूआत तक यह दुनिया की निगाहों से दूर, जर्मनी में बेडेन-वर्टेमबर्ग में उनके किले में सुरक्षित रहा । 1901 में एक पादरी जोसेफ फिशर वॅल्फेग्ग किले में वाल्डबर्ग संग्रह पर शोध कर रहे थे। वही इन नक्शों को दोबारा दुनिया के सामने लाए।

1903 में जोसेफ फिशर और फ्रांज़ वॉन वीज़र की विद्वतापूर्ण टिप्पणियों के साथ 1507 और 1516 के नक्शों की प्रतिलिपियों का एक सेट प्रकाशित हुआ। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के भूगोल और नक्शा प्रभाग ने भी एक सेट खरीदा। पूरी बीसवीं सदी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस बिक्री के लिए उपलब्ध होने की सूरत में 1507 के नक्शे को खरीदने की इच्छा जताती रही। आखिर 1992 में नक्शे के मालिक प्रिंस योहान्न वाल्डबर्ग-वॉल्फेग्ग ने वाशिंगटन में स्पष्ट किया कि वह नक्शे की बिक्री के बारे में बात करने को तैयार हैं। 1999 में प्रिंस ने लाइब्रेरी

ऑफ कांग्रेस को सूचित किया कि जर्मन सरकार और बेडेन-वर्टेमबर्ग राज्य ने सीमित निर्यात लाइसेंस की अनुमति दे दी है। वर्ष 2001 के जून के अंत में प्रिंस और लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस में अंतिम रूप से नक्शे की कीमत पर रजामंदी हुई- कीमत थी एक करोड़ डॉलर। वर्ष 2003 के मई के आखिर में लाइब्रेरी के सफल अभियान के परिणामस्वरूप जरूरी राशि जमा भी हो गई। कांग्रेस और निजी दानदाताओं से बड़ी सहायता मिली।

1507 के नक्शे का शुरूआती आधुनिक मानचित्र निर्माण के क्षेत्र में ऐतिहासिक महत्व तो है ही, यह विभाग के अमेरिकी मानचित्रण संग्रह के विकास की दशा में भी एक मील का पत्थर है। यह लाइब्रेरी के दुर्लभ उत्तर मध्यकालीन-प्रारंभिक पुनर्जागरणयुगीन मानचित्रण संग्रह (इसमें टॉलेमी की एटलसों का संसार का सबसे समृद्ध संग्रह शामिल है) और 15 वीं सदी के अंत से लेकर 16 वीं सदी की शुरूआत तक कोलंबस और अन्य खोजियों की यात्रा संसाधन के चलते पल्लवित-पुष्पित हुए आधुनिक मानचित्रण युग के बीच एक सार्थक कड़ी है। यह उस नई रोशनी का प्रतिनिधित्व करता है जब टॉलेमी की 'कॉस्मॉग्राफी' और 'ज्योग्राफी' (1475 और उसके बाद के संस्करण) के आधार पर संसार के बारे में भौगोलिक समझ से हटकर अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, एशिया और प्रशांत महासागर के द्वीपों की 'नई दुनियाओं' की खबर यूरोप पंहुचने पर अध्येताओं और नाविकों के मानस में बन रही नई समझदारी आकार ले रही थी।

वाल्डसीमुल्लर नक्शा लाइब्रेरी के ज्योग्राफी एंड मैप डिवीजन के समृद्ध मानचित्रण कोष का अंग बन गया है जिसमें करीब 48 लाख नक्शे, 65,000 एटलसें, 500 से अधिक ग्लोब और डिजिटिल रूप में हजारों नक्शे हैं। नक्शा हासिल होने से अध्येताओं के लिए आधुनिक संसार के एकदम शुरुआती चित्रण को देख पाने का अनूठा अवसर उपलब्ध हो पाया है। 1507 में बने संसार के इस नक्शे के बहुत बड़े हिस्से पर उस तरह गौर नहीं किया गया जैसे अमेरिका वाले खंड पर किया गया है। सहारा रेगिस्तान के दक्षिण वाले अफ्रीका के इलाके, एशिया के दक्षिणी तट और यहां तक कि काले और कैस्पियन सागरों के आसपास के क्षेत्रों के अध्ययन और व्यापक चर्चा की दरकार है ताकि पता चल सके कि वाल्डसीमुल्लर और उनके साथी उन निष्कर्षों तक किन भौगोलिक स्रोतों के अधार पर पहुंचे जिनकी झलक 1507 के नक्शे में मिलती है।

प्रिंस वाल्डबर्ग-वॉल्फेग्ग और जर्मनी की सरकार के साथ बनी सहमति के आधार पर 1507 का वाल्डसीमुल्लर नक्शा लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस की टॉमस जेफर्सन बिल्डिंग के दूसरे तल पर स्थित गैलरी पैविलियन ऑफ डिस्कवरर्स में स्थायी प्रदर्शनी में रखा गया है। नक्शे के साथ लाइब्रेरी के संग्रह से निकाली गई वह सामग्री भी रखी गई है जो इसके समृद्ध इतिहास, इसके सर्जकों से इसके संबंध और सोलहवीं सदी में उपलब्ध उन स्रोतों के बारे में जानकारी देती है जिनके आधार पर इसकी रचना हुई। □

लेखक: जॉन आर. हेबर्ट वाशिंगटन डी.सी. में लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस के ज्योग्राफी एंड मैप डिवीजन के प्रमुख हैं।

विश्व की शब्द संपदा का संरक्षण

रेवंत भटनागर

अमेरिका की 200 वर्ष पुरानी लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस विश्व की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है जिसमें 12 करोड़ 80 लाख प्रकाशनों का संग्रह है। मुंबई में जन्मी लैला मुलगांवकर दिल्ली स्थित कार्यालय की अमेरिकी फील्ड डायरेक्टर हैं। यह विदेशों में स्थित उन 6 कार्यालयों में से एक है जो वाशिंगटन डी. सी., इलाकाई वाचनालयों और 49 अमेरिकी विश्वविद्यालयों की लाइब्रेरियों में उपयोग के लिए विश्व भर से प्रकाशित सामग्री जुटाते हैं तथा उसकी कैटेलॉगिंग करके संरक्षण करते हैं। 81 स्थानीय विशेषज्ञ 65 भाषाओं में भारत, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार (बर्मा), मालदीव, नेपाल, श्रीलंका और तिब्बत से पुस्तकें, समाचारपत्र, पत्रिकाएं, सरकारी गजट, सूचना पत्रक, मानचित्र तथा श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-वीडियो) रिकार्डिंग एकत्र करते हैं। मुलगांवकर कहती हैं, ''पुस्तकालयों के लिए विदेशों से सामग्री एकत्र करने का विचार 1950 के दशक में आया जब लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस और अमेरिकी शिक्षा जगत में यूरोपीय से इतर सामग्री की कमी पर भारी असंतोष व्यक्त किया गया। हम प्रत्येक देश से अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण कोई भी और कैसी भी, किसी भी भाषा और रूप में उपलब्ध सामग्री को एकत्र करेंगे।'' लाइब्रेरी विश्व के समाचारपत्रों, कानूनी गजटों और विधाई सदनों में बहसों की माइक्रो फिल्में तैयार करती है ताकि भावी शोधार्थी उनका उपयोग कर सकें। लाइब्रेरी की संभावनाओं के बारे में मुलगांवकर बताती हैं, ''हम नई दिल्ली में अमेरिकी इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज (ए आइ आइ एस) के साथ मिल कर एक परियोजना पर काम कर रहे हैं। यह संस्थान भारतीय मंदिरों के वास्तुशिल्प पर 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेंपल आर्किटैक्चर' के कई खंड प्रकाशित कर चुका है जिनमें भारतीय मंदिरों से संबंधित संपूर्ण ऐतिहासिक व तकनीकी जानकारी क्षेत्रीय तथा कालगत शिल्प शैलियों के विवरण सहित दी गई है। हम पहले इन ऐतिहासिक स्मारकों के रेखाचित्रों की माइक्रो फिल्में तैयार करेंगे और फिर उनका डिजिटलीकरण करेंगे।''

-ए. वेंकट नारायण